1886964

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

## उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ✗

विषय हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 05-04-2025

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

**परीक्षक हेतु निर्देश :–** (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

| प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक | प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| 1 | 15 | 19 | 5 |
| 2 | 6 | 20 | 5 |
| 3 | 6 | 21 | 5½ |
| 4 | 6 | 22 | |
| 5 | 2 | 23 | |
| 6 | 2 | 24 | |
| 7 | 2 | 25 | |
| 8 | 2 | 26 | |
| 9 | 2 | 27 | |
| 10 | 2 | 28 | |
| 11 | 2 | 29 | |
| 12 | 2 | 30 | |
| 13 | 2 | 31 | |
| 14 | 2 | योग | 79½ |
| 15 | 2 | प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off) | |
| 16 | 3 | अंकों में | शब्दों में |
| 17 | 3 | 80 | अस्सी |
| 18 | 3 | | |

परीक्षक के हस्ताक्षर [signature] संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

## परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में ''समाप्त'' लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा ''अनुचित साधनों के प्रयोग'' के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | | खण्ड - अ |
| | प्र.01 | |
| | (i) ans | (अ) भैरों |
| | (ii) ans | (स) पोटली |
| | (iii) ans | (ब) बेर |
| | (iv) ans | (अ) 35 |
| | (v) ans | (द) प्रभाष जोशी |
| | (vi) ans | (ब) घनानंद |
| | (vii) ans | (द) विद्यापति |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | (viii) ans | (स) भीष्म साहनी |
| | (ix) ans | (स) व्यंग्य |
| | (x) ans | (ब) लोक विश्वासों के नाम पर अंधविश्वासों पर |
| | (xi) ans | (अ) पुष्पित जंगल देखकर |
| | (xii) ans | (अ) फ्लेशबैक |
| | (xiii) ans | (ब) 48 मिनट |
| | (xiv) ans | (द) ड्राई - स्कर |
| 15 | (xv) ans | (स) समाचार पत्र |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | प्र०2 | |
| | (i) Ans | "मंद - मंद मुरली बजावत अधर धरे, मंद-मंद निकस्यौ मुकुन्द मधु - बन ते।" पंक्तियों मे माधुर्य गुण है। |
| | (ii) Ans | जहाँ व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का प्रयोग हो वहाँ च्युत संस्कृति दोष होता है। |
| | (iii) Ans | प्रत्येक चरण मे जगण, तगण, जगण एवं रगण के क्रम मे 12 वर्ण विद्यमान हो, वहाँ वंशस्थ छंद होता है। |
| | (iv) Ans | छप्पय छंद की अंतिम दो पंक्तियाँ उल्लाला छंद की होती है। |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

(v) ans चुपचाप खड़ी थी वृक्ष - पात
सुनती जैसे कुछ निज बात ।।
पंक्तियों में ~~दृष्टांत~~ मानवीकरण अलंकार है

(vi) ans कारण के उपस्थित होने पर भी जब
कार्य का न होना वर्णित किया जाये
तब विशेषोक्ति अलंकार होता है।

6

प्र॰3

(i) ans गद्यांश का शीर्षक भारतीय संस्कार / भारतीय संस्कृति है।

(ii) ans भारतीय चित जो आज भी 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है।

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |
| | (iii) ans | अपने आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है। |
| | (iv) ans | कालिदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नही होते सब नए खराब ही नही होते। भले लोग दोनो की जाँच कर लेते है, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते है। |
| | (v) ans | मूर्ख लोग दूसरो के इशारे पर भटकते रहते है। |
| 6 | (vi) ans | क्योंकि पुराने का 'मोह' सब समय वांछनीय ही नही होता। मरे बच्चे को गोद मे दबाये रहने वाले 'बंदरिया' मनुष्य का आदर्श नही बन सकती। |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | प्र.4 | |
| | (i) ans | प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक 'रूपसी के चरित्र चित्रण' है। |
| | (ii) ans | रूपसी से व्योम (आकाश) से उतर रही है। |
| | (iii) ans | रूपसी के केश सुनहरे हैं। |
| | (iv) ans | रूपसी स्वयं की छाया मे छिपी हुई है। |
| | (v) ans | रूपसी की वाणी मधुर है। |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 6 | (vi) | पद्यांश की भाषा सहज, सरल, स्पष्ट है। |

खण्ड - ब

| | | |
|---|---|---|
| 2 | प्र०5 उ०5 | शुक्ल जी के बाल मन मे 'भारतेंदुजी के संबंध मे मधुर प्रकार के भाव दबे बसी हुई थी। क्योकि शुक्ल जी बचपन मे भारतेंदुजी के नाटक राजा हरिश्चन्द्र व भारतेंदुजी के बारे मे अन्तर का पता नही कर पाते थे उनके मे उनके लिए मधुर भावना का संचार था। |
| 2 | प्र०6 उ०6 | 'ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' है। ऐसा लेखक ने सिंगरौली क्षेत्र के गाँव के निवासियो के लिए कहा। क्योकि सिंगरौली क्षेत्र मे, अमरौली पावर प्रोजेक्ट लगाने से वहाँ के लोगो को विस्थापित होने की समस्या पैदा हो गई थी। उन्हे अपने ही घर से निकाला |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

जा रहा था।

प्र.7
उ.7 "दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।
प्रस्तुत पंक्तियों में निराला के जीवन के पहलू का पता चलता है उनका जीवन कष्टदायी और दुःखों से भरा था। क्योंकि बचपन में ही उनके माता पिता की मृत्यु हो गयी। बाद में यौवनकाल में पत्नी की मृत्यु हो गयी। तथा विवाहित पुत्री सरोज की मृत्यु भी हो गयी। इनसे उन्हें बहुत दुःख हुआ। वे इन पंक्तियों के माध्यम से अपनी पीड़ा व्यक्त करना चाहते है।

2

प्र.8
उ.8 "यह तन जारौं छार कै, कहौ कि पवन उडाउ।
मकु तोहि मारग होइ परौं, कंत धरै जहं पाउ॥

प्रस्तुत पंक्तियों में विरहिणी की इच्छा व्यक्त हुए है कि फाल्गुन मास में उसका विरह अत्याधिक बढ़ गया है इसलिए वह कहती है कि मैं

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

मर जाऊ। और पवन से निवेदन करती है कि मेरी राख को अपने प्रिय के कदमो मे जाकर बिछा दे। ताकि मरने के बाद ही सही उसे अपने प्रिय का स्पर्श मिल जाए।

2

प्र०9
उ.9 "अंधापन ही क्या थोडी विपत थी" ऐसा सूरदास इसलिए कहा कि क्योंकि वह अंधा था लेकिन भीख मांगकर खाता था और पैसे एकट्ठा करता था लेकिन एक दिन भैरो ने उसकी झोपडी मे आग लगा दि और उसकी सार कमाई की पोटली वह ले गया। इसलिए ऐसा कहा।

2

प्र०10
उ.10 'हाँ' पशु माताएँ भी ममत्व का सुख दे पाती है। क्योंकि पशु माताएँ बच्चा हो पर उन्हे दूध पिलाती है। लेखक ने दिलशाद गार्डन मे एक बतख को पानी मे देखा जब अंडा देने को आए तो वह पानी से बाहर निकल गई और सुरक्षित जगह पर अंडा दिया तथा अपनी कठोर चोंच से प्यार से अंडो को सहलाती है। और उनको कव्वों की नजर

2

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

से भी बचाती है।

Q.11 'अन्योक्ति अलंकार → जब अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का बोध कराया जाता है अर्थात अपने मन की बात सीधे-सीधे न कहकर अन्य उक्ति से कही जाती है। वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण -

नहि पराग नही मधुर मधु।
नहि विकास इही काल ॥
अलि कलि सों बन्धों है।
आगे कौन हवाल ॥

इसमे कवि अपनी बात राजा को पराग व पुष्प को माध्यम बनाकर कहता है।

(2)

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

प्र.12
उ.12 पत्रकार को अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य निम्न चार बातें -

(i) पत्रकार की भाषा सहज सरल होनी चाहिए।

(ii) पत्रकार लेखन कि भाषा आम बोल चाल की होनी चाहिए जिसे सब पढ़ व समझ सके।

2

(iii) पत्रकार लेखन पाठकों व श्रोताओं की रुचि ध्यान मे रखकर लिखना चाहिए

(iv) पत्रकार लेखन मे वास्तविक तथ्यों की जानकारी देना चाहिए।

प्र.13
उ.13 कहानी के प्रमुख तत्व 'कथानक' है। तथा पात्रों को भी कहानी के प्रमुख तत्वों को माना जाता है। क्योंकि पात्रों द्वारा ही कहानी का संवाद होता है और कहानी मे द्वन्द भी प्रमुख तत्व है। द्वन्द से ही कहानी को आगे बढ़ाया जा सकता है।

2

BSER-1/30/2023

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

प्र.14
उ.14 रेडियो की निम्न खूबियाँ जो उसे अन्य माध्यमो से विशिष्ट बनाती है -

(i) रेडियो, एक श्रव्य माध्यम है। इसे कभी भी सुना जा सकता है।

(ii) रेडियो की भाषा आम बोल चाल की होती है। जिसे सब समझ सकते है।

(iii) रेडियो अशिक्षित लोगो के लिए भी उपयोगी है।

2

BSER-180/2025

प्र.15
उ.15 (जय शंकर प्रसाद) का साहित्यिक परिचय -

जन्म - 1889ई में हुआ

जय शंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाएँ -

* नाटक → अजातशत्रु,
स्कन्दगुप्त,
चन्द्रगुप्त,
राज श्री
ध्रुवस्वामिनी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कहानी → आँधी,
इन्द्रजाल,
~~आकाश~~ प्रतिध्वनि और आकाश

उपन्यास → कंकाल,
तितली,
इरावती,

निबन्ध → काव्य कला और अन्य निबंध

कविताएँ → आँसू,
झरना,
लहर,
कामायनी,
प्रेमपथिक,
कानन,
कुसुम, ।

2

आदि जय शंकर प्रसाद की रचनाएँ है ।

PTO

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

खण्ड – स

प्र०16

उ०16 'यह दीप अकेला' कविता मे कवि दीप को पंक्ति मे इसलिए देना चाहता है क्योकि कवि ने दीप को मनुष्य तथा पंक्ति को समाज (समष्टि) का प्रतिकात्मक माना है। जिस तरह दीप (स्नेह) तेल से भरा रहता है। गर्वीलापन भर रहता है। और मदमाता रहता है उसी प्रकार मनुष्य भी सर्वशक्तिमान है। वह स्नेह से पुरित है। लेकिन एक अकेला दीपक सब जगह अपनी रोशनी नही फैला सकता तथा उसे दीपो की पंक्ति मे मिलाने से उसका महत्व बढ़ जाता है। अर्थात पंक्ति से सब जगह रोशनी हो जाती है। उसी प्रकार एक अकेले मनुष्य को समाज मे मिलाने से उसका महत्व बढ़ जाता है। तथा वह अपनी शक्ति का सही उपयोग कर सकता है। जिससे हमारा राष्ट्र का गौरव हो सके इसलिए ऐसा कहा।

3

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | | संकेत अथवा |
| 4 | प्र.17 उ.17 | "मुझे भूख नही है" नानी चलो खा ले मुझे भूख लगी है। संभव के इन दोनो विरोधाभासी कथन के आधार पर उसकी मनोदशा इस प्रकार है - संभव जब हर की पौड़ी पर गया था तब उसे एक गुलाबी साड़ी में एक सुन्दर हास्यमयी लड़की उसके बगल में आकर खड़ी हो गयी संभव उस समय पंडित जी से कलावा बंधा रहा था। तभी लड़की बोली क्या करे पंडित हमे आज आरती के लिए आने के लिए देर हो गयी। और कहा कि हम कल फिर आयेगे। पंडित जी ने लड़की के हम को युगल मे ले लिया और आशीर्वाद दे दिया जिससे लड़का-लड़की सकपका गये। संभव लड़की से कहना चाहता था कि इसमें उसकी कोई गलती नही है लेकिन लड़की वहा से चली गयी। तब संभव घर आ गया तब नानी ने कहा कि खाना खा ले तब उसने कहा कि भूख नही है क्योकि संभव बेचैन था। उसके मन मे उथुल-कुथल चल रही थी। तभी उसे याद आया कि लड़की ने कहा था कि हम कल आयेगे तब वह खुश हो गया और नानी से कहा कि चलो नानी चलो खा ले मुझे |

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

भूख लगी है।

प्र.18

उ.18 सूरदास की झोपड़ी नही उसके सपनों कि चिता जल रही थी। क्योंकि सूरदास की झोपड़ी मे सिर्फ झोपड़ी ही नही बल्कि उसके जीवन भर की कमाई भी जल रही थे। जिसे वह बड़े जतन से संभाल कर रखा था। उसे पाँच सौ से भी अधिक पैसे एकत्रित कर लिए थे। वह गया जाकर अपने पितरो का पिंड दान करना चाहता था। उन पैसो से मिठुआ का व्याह भी करना चाहता था। गाँव वालो के लिए एक कुआँ बनवाना चाहता। इन सब अभिलाषाओं से उसने पैसे एकत्रित किये थे। लेकिन उसकी झोपड़ी मे भैरो ने आग लगा दी और पैसे की पोटली उठाकर ले गया। इसलिए उसके लिए झोपड़ी नही उसके सपनों की चिता जल रही थी।

3

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

खण्ड - द

संकेत - अथवा

प्र.17
उ.17 प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा रचित 'संवदिया' की कहानी से उद्धृत है। इसमे हरगोबिन बडी बहुरिया का संवाद लेकर बडी बहुरिया के मायके जाता है। उस समय का वर्णन प्रस्तुत है।

व्याख्या → जब हरगोबिन बडी बहुरिया का संवाद लेकर जाता है। तब बडी बहुरिया की माँ हरगोबिन से कहती है कि बडी बहुरिया का संवाद लाये हो। तब हरगोबिन कहता है कि मे कोई संवाद नही लाया हूँ। और कहता है कि बडी बहुरिया ने कहा थी। था कि अगर घर के कामो से छुट्टी मिलगी तो दशहरा के समय गंगा जी के मेले मे आकर माँ से भेंट मुलाकात कर जायेगी। यह सुनकर उसकी बडी बुहरिया की बुढी माँ चुप रही।

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

हरगोबिन बोलता है कि "छुट्टी कैसे मिले? सारी घर गृहस्थी बड़ी बहुरिया के ऊपर ही है। तब बड़ी बहुरिया की बूढ़ी माँ बोली, मैं तो बबुआ से कह रही थी कि जाकर दीदी को लेकर आ जाए यहीं रहेगी। वहाँ अब क्या रह गया है? जमीन जायदाद तो सब चली गई। तीनों देवर अब शहर में जाकर बस गए हैं। कोई खोज खबर भी नहीं लेते। मेरी बेटी अकेली है।

5

BSER-180/2025

विशेष → (i) भाषा सहज सरल और आम बोल चाल की है।
(ii) रेणु ने आंचलिक भाषा पर जोर दिया है।
(iii) बड़ी बहुरिया के प्रति उसकी माँ ने बड़ी बहुरिया के प्रति प्रेम प्रकट हुआ है।
(iv) हरगोबिन अपना संवाद नहीं कह पाता है।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | | संकेत - (अथवा) |
| | प्र.20 उ.20 | प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्या' कांड से लिया गया है। इसमे भरत के रामबनगमन के लिए स्वयं को दोषी माना है। और राम के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया है। |
| | | व्याख्या → तुलसीदास कहते है कि भरत जी ने चित्रकूट सभा मे कहते है कि श्रीराम और भरत के प्रेम को तो विधाता भी न सके अर्थात विधाता ने श्रीराम और भरत जी को अलग कर दिया है। भरत जी कहने लगे कि उन्हे अलग करने के लिए विधाता ने उनकी माता का सहारा लिया। भरत जी कहने लगे कि यह कहते हुए मुझे आज शोभा नही देता कि माता नीच है और मै साधु और समझदार हूँ। भरतजी कहते है कि माता मंद बुद्धि कि और मै बुद्धिमान हूँ यह कहते हुए मुझे बिलकुल शोभा नही देता। क्योकि कोदव बालि अर्थात जंगली पौधे से कभी भी उच्च कोटि का धान पैदा नही हो सकता। |
| 5 | | |

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

जिस तरह काले घोंघा से उच्च कोटि को मोती प्राप्त नहीं हो सकता अर्थात मै भी नीच माता से उत्पन्न होकर साधु नहीं बन सकता। भरत जी कहते है कि मै सपने मे भी किसी और को दोष नहीं दे सकता। मेरा भाग्य ही दुर्भाग्य के समान अथाह राम सागर के समान बन गया है। बिना सोचे समझे मै किसे दोष दूँ। भरत जी कहते है कि मेरा प्रेम रामजी के प्रति निश्चल है। ये सब गुरु वशिष्ठ और राम जी जानते है। भरत जी कहते है कि मन एक ही प्रकार से मेरा भला हो सकता है। सीता और राम से मुझे अच्छे परिणाम की आशा है। अर्थात वे मुझे क्षमा कर देंगे।

विशेष -) (i) भाषा अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(ii) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। रूपक अलंकार का भी प्रयोग हुआ है।

(iii) भरत जी ने अपने भाग्य को

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

छोड़ दिया है।
(iv) राम और सीता से अच्छे परिणाम की आशा की है।

प्र.21
Q.21

योग का महत्व

संकेत → (i) प्रस्तावना
(ii) योग का महत्व
(iii) योग के लाभ
(iv) योग न करने से हानि
(v) उपसंहार

प्रस्तावना → शास्त्रों मे कहा गया है कि स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। हमारे आचार्यों व विद्वानों ने भी योग को महत्व देते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। उसके लिए हमे योग करना चाहिए। योग हमारे जीवन का आभिन्न अंग है। सरकार भी आज योग करने के लिए प्रेरित कर रही है। तथा 21 जून को योग दिवस सभी को मनाने के लिए घोषणा की है। आज हमारे

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

देश मे सभी नागरिक 21 जून को योग दिवस मानते है। और योग करने के लिए जागरुक रहते है। योग करने से ही हमारे शरीर का सर्वांगीण विकास हो सकता है।

योग का महत्व → अनेक कारणो से योग का महत्व है। आज हमारे देश आधे से ज्यादा मरीज हॉस्पीटल मे रहते है क्योकि आज हमारे देश मे अनेक बिमारिया फैल रही है जैसे बर्ड फ्लू, चिकनगुनिया, हैजा मलेरिया, कोरोना हाईब्लडप्रेशर आदि बिमारियाँ फैल रही है जिसका शिकार हमारे नागरिक हो रहे है जिस कारण आम आदमी का स्वास्थ्य ठीक नही रह पाता है। इसके लिए हमे योग करना चाहिए क्योकि योग से ही हमारी इन बिमारियो को हम दूर कर सकते है। योग से हम हमारा

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

हमारा स्वास्थ्य ठीक कर सकते है। स्वस्थ्य शरीर रहने पर हमारा काम मे मन लग जाता है। तथा हम देश को गौरविन्त करने के काम कर सकते है। स्वस्थ शरीर से मास्तिष्क हमेशा सक्रिय रहता है। जिस से हम अच्छी तरह से सोच - विचार कर सकते है। अपने जीवन के फैसले सोच - समझकर ले सकते है। इससे हमारा जीवन खुशहाल बन सकता है। हमे योग करना चाहिए क्योंकि हम कभी - भी किसी भी तरह की मुश्किल मे हो हमारा दिमाग उस मुश्किल बडी मे साथ दे सकता है। अगर मस्तिक मास्तिष्कि सक्रिय रहेगा तो हम बडी - बडी मुश्किल का सामना भी कर सकेगा। योग करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। जब आत्मविश्वास बढ़ता है तब मनुष्य हर काम करने मे सक्षम हो जाता है। आदि महत्व है।

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

योग के लाभ → योग करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा। योग करने से हमारा ~~मानसिक~~ मास्तिष्क सक्रिय रहता है। जिससे हम सब प्रकार से कार्य कर सकते है। योग करने से हमारा दिमाग शांत रहता है। योग करने से ~~हमारा~~ हमारे शरीर का सर्वांगीण विकास होता है। योग करने से हमारे तर्क - वितर्क की शक्ति बढ़ती है।

योग न करने से हानि –

(i) योग न करने से हमारे शरीर का सर्वांगीण विकास नही हो पाता है।

(ii) योग न करने से हमारा शरीर स्वस्थ नही रह पाता है।

(iii) योग नही करने से अनेक प्रकार की बिमारियों के हम शिकार हो सकते हैं।

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

(iv) योग न करने से हमारे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता।

उपसंहार → आज योग हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। योग करने से ही हमारे शरीर का विकास होगा। योग करने से युवाओं की सोचने समझने की शक्ति बढ़ेगी जिससे हमारी देश प्रगति कर सकता है।

5½

समाप्त

BSER 180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | | (80) |

BSER-180/2025

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

(80) [illegible]

BSER-180/2025